व्याख्या भाग

प्रथम प्रकाश

मंगलाचरण

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व मंगलाचरण करना भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषता है। कवि-कर्म भी इसका अपवाद नहीं है। यही कारण है कि प्रत्येक ग्रंथकार अपने ग्रंथ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए ग्रंथारंभ में सर्वप्रथम मंगलाचरण की योजना करता है। 'आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखम्' के अनुसार मंगलाचरण तीन प्रकार का होता है—आशीर्वादात्मक, नमस्कारात्मक और वस्तुनिर्देशात्मक। आशीर्वादात्मक मंगलाचरण में आराध्य अथवा आराध्या से आशीर्वाद प्राप्त करने की प्रार्थना की जाती है। नमस्कारात्मक मंगलाचरण में आराध्य अथवा आराध्या के गुणों अथवा किसी एक विशेष गुण का वर्णन किया जाता है और वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण में आराध्य अथवा आराध्या की स्तुति के साथ-साथ ग्रंथ के वर्ण्य-विषय की ओर भी संकेत किया जाता है।

केशव ने इस परम्परा का निर्वाह किया है। इन्होंने प्रथम छन्द में गणेश की, द्वितीय छन्द में सरस्वती की और तृतीय छन्द में राम की स्तुति की है। इनका मंगलाचरण नमस्कारात्मक है। यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि रामचन्द्रिका के अनुसार राम केशव के आराध्य हैं, फिर इन्होंने अपने आराध्य की स्तुति करने से पूर्व गणेश और सरस्वती की वंदना क्यों की है? इस प्रश्न के उत्तर में कहा जा सकता है कि वस्तुतः केशव के आराध्य राम हैं, किन्तु इस आराध्य तक पहुँचने में कवि को दो विकट बाधाएँ दिखाई देती हैं—एक है मन का कालुष्य और दूसरा है अज्ञान। जब तक मन का कालुष्य नष्ट नहीं हो जाता, तब तक अज्ञान का गहरा आवरण मानव-मन पर पड़ा ही रहता है; और जब तक यह आवरण है तब तक आराधक की आराध्य तक पहुँच कहाँ? फलत कवि ने सर्वप्रथम गणेश की वन्दना करके इस कालुष्य को धोया है, क्योंकि गणेश जी में 'दूरि कै कलंक-अंक भव-सीस-ससि रूप' दास के कलंक को नष्ट करने की क्षमता है। तत्पश्चात् इन्होंने सरस्वती की वंदना की है जो अज्ञानान्धकार को ध्वंस करने में इतनी उदार है कि इनकी उदारता का वर्णन ही नहीं किया जा सकता; और इसके पश्चात् केशव ने 'पूरण पुराण अरु पुरुष पुराण परिपूरण' राम की वंदना की है, जिनका रूप अणिमा, गुण गरिमा, भक्ति महिमा आदि सिद्धियों को तथा नाम मुक्ति को प्रदान करने वाला है। यदि इस आधार पर केशव के भक्ति-सिद्धान्त का विवेचन किया जाये तो कहा जा सकता है कि केशव के मतानुसार आराध्य तक पहुँचने के लिए पहले मन की कालिमा और अज्ञान को नष्ट करना आवश्यक है।

बालक मृणालनि ज्यों तोरि डारै सब काल,
कठिन कराल त्यों अकाल दीह दुख को।
विपति हरत हठि पद्मिनी के पात सम,
पंक ज्यों पताल पेलि पठवै कलुख को।
दूरि कै कलंक-अंक भवसीस-ससि-सम,
राखत है केसौदास दास के बपुख को।
साँकरे की साँकरन सनमुख हात तौरै,
दसमुख मुख जौवें गजमुख-मुख को॥1॥

शब्दार्थ—बालक = हाथी का बच्चा। मृणालनि = कमल की नाल। सब काल = हर समय। कराल = भयंकर। दीह = दीर्घ, बड़े-बड़े। हठि = हठ करके। पद्मिनी = पुरइन। पात सम = पत्ते के समान। पंक = कीचड़। पेलि = दबाकर। कलुख = कालुष्य, पाप। कलंक-अंक = कलंक का चिन्ह। भव-सीस-ससि-सम = सहादेव के मस्तक पर स्थित चन्द्रमा के समान। बपुख = वपुष्य, शरीर। सांकरे की = संकट में पड़े हुए व्यक्ति की। साँकरन = संकल, बंधन। सनमुख होत = सामने होते ही। दशमुख = दसों दिशाओं में रहने वाले लोग, अथवा ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों देव क्योंकि ब्रह्मा के चार मुख, विष्णु के एक मुख और शिव के पाँच मुख माने जाते हैं।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि केशव ने गणेश जी की महिमा का वर्णन करते हुए बताया है कि वे सब प्रकार के पापों का नाश करने में समर्थ हैं, इसीलिए सभी लोग, यहाँ तक कि त्रिदेव भी उनकी कृपा के लिए उनका मुँह देखते रहते हैं।

व्याख्या—जिस प्रकार हाथी का बच्चा हर समय अर्थात् बिना किसी बाधा के आसानी से कमल की नाल को तोड़ डालता है, उसी प्रकार गणेश जी अपने भक्तों के आकस्मिक कठिन, भयंकर और बड़े-बड़े दुःखों को नष्ट कर देते हैं। वे पुरइन के पत्तों के समान हठ करके विपत्ति का हरण कर लेते हैं और कीचड़ के समान पाप को दबाकर पाताल भेज देते हैं। भाव यह है कि जिस प्रकार हाथी का बच्चा अत्यन्त आसानी से पुरइन के पत्तों को तोड़ डालता है औ कीचड़ को दबाकर नीचे कर देता है, उसी प्रकार गणेश जी अपने भक्तों के दुःखों का हरण कर लेते हैं और उनके पापों को सहज रूप से नष्ट कर देते हैं। केशवदास कवि कहते हैं कि गणेश जी अपने भक्तों के शरीर के लाँछन को दूर करके उन्हें उसी प्रकार अपनी शरण में ले लेते हैं जिस प्रकार शिव ने चन्द्रमा का कलंक-चिन्ह दूर करके उसे अपने मस्तक पर धारण कर लिया है। गणेश जी इतने दयालु हैं कि संकट में पड़े हुए व्यक्ति के बंधनों को ये सामने आते ही तोड़ देते हैं, अर्थात् तुरन्त उसके संकटों का नाश कर देते हैं। उनकी इसी दयालुता एवं शक्ति के कारण दशों दिशाओं के रहने वाले लोग अथवा ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों देव उनकी कृपा के लिए उनका मुख देखते रहते हैं।

विशेष—1. इस वंदना में कवि केशव के भावपक्ष और कलापक्ष दोनों का समुचित समन्वय है। भावपक्ष की दृष्टि से 'तोरि डारै सब काल', 'हरत हठि,' 'सनमुख होत तौरे' और 'मुख जोवैं' आदि विशेष रूप से विचारणीय हैं। इन पदांशों से गणेश जी की भक्त-वत्सलता और शक्तिमत्ता दोनों पूर्णतया व्यंजित हैं।

2. एक पौराणिक कथा में बताया गया है कि गणेश जी के शाप के कारण ही चन्द्रमा कलंकित है और इन्हीं की कृपा से द्वितीय का चन्द्रमा निष्कलंक है। इस आधार पद इन पंक्तियों का—

'दूरि कै कलंक-अंक भव-सीस-ससि-सम,
राखत है केशौदास दास के बपुख को।'

यह अर्थ भी किया जा सकता है—

'केशव कवि कहते हैं कि जिस प्रकार गणेशजी शिव के मस्तक पर स्थित चन्द्रमा को निष्कलंक बना देते हैं, उसी प्रकार अपने सेवक के शरीर को भी पापहीन कर देते हैं।

तुलना—गणेश की वंदना अनेक कवियों और आचार्यों ने की है। उदाहरण के लिए दशरूपककार की ये पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं—

'नमस्तस्मै गणेशाय, यत्कण्ठः पुष्करायते।
मदाभोग घनध्वानो, नीलकण्ठस्य ताण्वे॥'

अर्थात् नीलकण्ठ भगवान् शंकर के ताण्डव-नृत्य में जिस गणेशजी का कण्ठ मद की परिपूर्णता से गंभीर ध्वनि वाला होने के कारण मृदंग का काम देता है, मैं उन गणेशजी को नमस्कार करता हूँ।

इस मंगलाचरण में और उपयुक्त मंगलाचरण में अन्तर यह है कि इसमें गणेशजी के मनोरंजन रूप की ओर संकेत किया गया है और उसमें उनके पाप-विमोचक एवं भक्त-रक्षक स्वरूप की ओर। भावात्मक दृष्टि से केशव का पक्ष प्रबल है।

अलंकार—अनुप्रास, छेकानुप्रास, उपमा, परिकरांकुर, यमक।